Volume : 5 | Issue : 9 | September 2016 • ISSN No 2277 - 8179 | IF : 3.508 | IC Value : 69.48

Original Research Paper

# माध्यमिक स्तर के छात्रों के जीवन मूल्यों पर टी0वी0 व सिनेमा के प्रभाव का अध्ययन

Education

KEYWORDS :

राधा रानी सिंह

नेट/जे.आर.एफ. शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र) नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

## ABSTRACT

मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है। मूल्यों के विकास में सर्वप्रथम परिवार तत्पश्चात् विद्यालय एवं समाज अहम् भूमिका निभाते है। मूल्य के आधार पर ही मानव अपना जीवन दर्शन बनाता है। आज मूल्यों के ह्रास के कारण मानव व्यवहार अनिश्चित सा हो गया है। आज हम 21वीं शदी में प्रवेश कर चुके है, आजकल इंटरनेट, टेलीविजन नेटवर्क और ग्लोबलाइजेशन की वजह से दुनियां तेजी से आगे बढ़ रही है, और समय के साथ बच्चों में भी परिवर्तन आ रहा है। उनका ये ज्ञान उन्हें अच्छा भी बना रहा है तो कहीं बुरा भी।

प्रस्तुत अध्ययन को सम्पादित करने हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इलाहाबाद शहर के माध्यमिक विद्यालय में कक्षा 11 एवं 12 के 50 छात्र जिसमें 25 टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले एवं 25 टी0वी0 एवं सिनेमा न देखने वाले छात्र को लिया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन हेतु डॉ0 रामजी श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मानकीकृत प्रश्नावली का चयन किया गया है। प्राप्त आँकडों के निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है। प्राप्त निष्कर्ष प्राप्त हुये– उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य अन्य मध्यम स्तर एवं निम्न स्तर की की अपेक्षा अधिक है। तीनों स्तरों पर सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्य समान पाये गये। मध्यम एवं निम्न स्तर पर धार्मिक मूल्य अधिक पाये गये।

भूमिका

सभी मनुश्य षारीरिक रूप से लगभग एक समान ही होते है किन्तु षिक्षा के द्वारा ही उनमें परिवर्तन परिलक्षित होता है। प्राचीन काल से ही मानव अपने ग्रन्थों के माध्यम से मूल्य षिक्षा पर जोर देता रहा है। अपने को सुसंस्कृत बनाने के लिए षिक्षा का सहारा लिया है प्राचीन काल एवं मध्य कालीन भारत में भी मूल्यपरक षिक्षा एवं कार्यों पर बल दिया जाता रहा है। परन्तु मध्यकाल में अनेक धर्मों एवं संस्कृतियों के आगमन के कारण भारत के लोगों में मूल्यों की कमी आयी परन्तु 19वीं षताब्दी में अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, जापान आदि देषों में हुए औद्योगिक क्रान्ति एवं तकनीकी विकास ने मानव मूल्यों में चमत्कारिक परिवर्तन किये है।मानव के जीवन मूल्यों में चमत्कारिक परिवर्तन किये है। अर्थ का महत्व बढ़ जाने के कारण व्यक्ति अर्थ जुटाने में लगा रहता है तथा अर्थ का प्रयोग भौतिक सुख–सुविधा एवं ऐसो–आराम के लिए होता है भारत के लोग भी इन परिणामों से प्रभावित हुए है। अंग्रेजी हुकूमत ने जहाँ हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को क्षत–विक्षत किया वही आज की तकनीकी एवं व्यावसायिक षिक्षा पद्धति ने हमारी नैतिक एवं आध्यात्मिक षिक्षा पर आधारित षिक्षा व्यवस्था को लगभग समाप्त ही कर दिया है।

आज मूल्यों के ह्रास के कारण मानव व्यवहार अनिष्चित सा हो गया है। समाज में व्यक्ति का विष्वास एक दूसरे से उठता जा रहा है प्रत्येक व्यक्ति तनाव में जी रहा है। चारों ओर भ्रश्टाचार का बोल–बाला है। मंत्री, जन–प्रतिनिधि, अधिकारी, कर्मचारी सभी भ्रश्ट आचरण में लिप्त है जो जहाँ भी मौका पा रहा है एक दूसरे का षोशण करने में लगा है। मंत्री, नेता, देष के धन को लूटने में लगे है यह सब कृत्य मूल्यों के ह्रास के कारण हो रहा है।

मूल्य एक मानव विष्वास है जिसके आधार पर मनुश्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है। मूल्यों के विकास में सर्वप्रथम परिवार तत्पष्चात् विद्यालय एवं समाज अहम् भूमिका निभाते है। मूल्य के आधार पर ही मानव अपना जीवन दर्षन बनाता है। मूल्य मानव जीवन के अर्थ, उच्चता एवं श्रेश्ठता प्रदान करती है। षिक्षा का उद्देष्य सर्वांगीण विकास के लिए मनुश्य में मानवीय गुणों का होना अति आवष्यक है। विद्वानों का मानना है कि षिक्षा की तीन प्रक्रिया षिक्षण, प्रषिक्षण एवं अनुदेषन से मानव मूल्यों का निर्माण सम्भव नही है। मूल्यों के निर्माण हेतु मूल्यों का आत्मसातकरण करना जरूरी है।

आज हम 21वीं षदी में प्रवेष कर चुके है। षिक्षा की चुनौतियाँ ज्ञान की अनेक धाराओं के अन्वेशण की नवीनतम विद्याओं की तरफ अग्रसर हो रही है जिससे षिक्षा व्यवस्था आधुनिक आवष्यकताओं की पूर्ति के माध्यम से मार्ग को सुगम कर सकें।

षिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए आज हमारे देष में केन्द्र सरकार द्वारा केन्द्रीय विद्यालयों तथा राज्य सरकार द्वारा परिशदीय विद्यालयों को बढ़ावा दिया जा रहा है जिसके माध्यम से देष के बालकों में राश्ट्रीय समरसता, समानता, सहयोग, आस्था, श्रद्धा और एक–दूसरे के प्रति विष्वास को उत्पन्न किया जा सके। यही हमारे जीवन मूल्य है लेकिन आज हमारा ध्यान इन मूल्यों से हटने लगा है इस भौतिकवाद के दौड़ में जीवन मूल्य न्यून होते जा रहे है। जिसके कारण समाज में स्वार्थ व भ्रश्टाचार का बोल–बाला बढ़ता जा रहा है। चूँकि बालक ही विकास की आधारषिला है और यह बालक प्राथमिक व उच्च विद्यालय में षिक्षा ग्रहण करते है जिनमें केन्द्रीय एवं परिशदीय विद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि इन विद्यालयों के द्वारा उच्च नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया जाए तो निःसन्देह समाज की विकास की दिषा में महत्वपूर्ण प्रगति हो सकती है। षिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व की कुँजी है अतः पुरू से ही वह षिक्षा जो वर्तमान समय में हमारे सामने राज्य सरकार द्वारा स्थापित परिशदीय विद्यालयों के माध्यम से प्राथमिक षिक्षा के रूप में हमारे सामने दृश्टिगोचर हो रही है जो हमारे समाज की रीढ़ है उसमें नैतिकता, समानता, भाई–चारा और विष्वास जैसे जीवन मूल्यों को विकसित करना है साथ ही राश्ट्रीय स्तर पर संचालित केन्द्रीय विद्यालय जो हमारी राश्ट्रीय एकता के धरोहर के रूप में स्थापित है। उसके स्थापना के उद्देष्यों को जो राश्ट्रीय जीवन मूल्यों का आधार है इसका अध्ययन करना हमारे षोध की आवष्यकता है ताकि हम यह ज्ञात कर सकें कि केन्द्रीय एवं परिशदीय विद्यालयों के बालकों में हम जीवन मूल्य कहाँ तक व्यवस्थित कर सकें।

मूल्य वे सांस्कृतिक अथवा व्यक्तिगत धारणाएं एवं आदर्ष है जिनके द्वारा वस्तुओं एवं घटनाओं की एक दूसरे के साथ तुलना की जाती है। ये वे कसौटियाँ है और व्यवहार के पैमाने हैं जिनके आधार पर अच्छे–बुरे, वांछित– अवांछित, सही–गलत, करणीय एवं अकरणीय का निर्णय किया जाता है।1

आजकल इंटरनेट, टेलीविजन नेटवर्क और ग्लोबलाइजेषन की वजह से दुनियां तेजी से आगे बढ़ रही है। और समय के साथ बच्चों में भी परिवर्तन आ रहा है। यह गारंटी नहीं है कि पढ़–लिखकर उन्हें अच्छी नौकरी मिल जाएगी। जिन्दगी पहले से कहीं ज्यादा असुरक्षित हो गयी है, हर क्षेत्र में प्रतिद्वंद्विता बढ़ गयी है। किषोर अपने आसपास जो देखते है, फौरन ग्रहण कर लेते है। सिनेमा, किताबें, दोस्तों की बाते रोज उनके ज्ञान में इजाफा करती हैं। वे अपनी उम्र से कुछ ज्यादा ही जान जाते है। उनका ये ज्ञान उन्हें अच्छा भी बना रहा है तो कहीं बुरा भी।

आज का युग इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का युग है आज समाज में कुछ भी असम्भव नहीं है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने समाज के हर पहलु को छुआ है। और जिसका असर प्रत्येक व्यक्ति के घर–घर में दिखाई देता है। इलेक्ट्रानिक मीडिया ने सूचना से लेकर मनोरंजन तक के सभी साधन मनुश्य को दिया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के कार्यक्रमों ने चाहे वह सिनेमा हो या फिर धारावाहिक इसने सभी व्यक्ति के मन में चाहे वह बच्चे हो या फिर बड़ों सभी में अपनी एक विषेश जगह बना ली है। उठते–बैठतें, खाते–पीते हर समय हम बस इसी को देखते है। खास कर बच्चों पर इसका सीधा प्रभाव होता है। आजकल बच्चों के मनोरंजन के लिए नई–नई सिनेमों बनाई जा रही है, जिसे बच्चों का ज्ञान बढ़ रहा है। विज्ञान आज इतनी तरक्की कर रहा है कि वह सिनेमा के द्वारा बच्चों के दिमाग को कम्प्यूटर बना दे रहा। कार्टून सिनेमों के द्वारा बच्चों को देवी–देताओं की कहानियां दिखाई जाती हैं वही एक ओर रामायण जैसे महाकाव्य को भी बच्चों को कार्टून सिनेमों द्वारा दिखाया गया। बच्चों के जासूसी सिनेमों भी बनाई जाती है।

सिनेमों के कई रूप होते है वही कुछ ऐसी भी सिनेमों है जो बच्चों पर गलत असर डाल रही है। बच्चों का अपरिपक्व मस्तिश्क जो सिनेमों द्वारा कही न कही प्रदूशित हो रहा है। उनके मस्तिश्क का मानसिक हनन हो रहा है। आजकल के बच्चें संस्कारहीन हो रहे है, उनमें फैषन, आधुनिकता का असर दिखाई देता है। वो सिनेमा के हीरों जैसा हेयर स्टाइल रखते है, वैसे कपड़े पहनेंगे, वैसे बोलने की स्टाइल, इस तरह से अपने पंसदीदा हीरो की नकल वह हर तरह से उतारने की कोषिष करते है। वही अष्लीलतापूर्ण सिनेमों के दृष्य उनके जिज्ञासु प्रवृत्ति मन को उत्तेजित करता है। जिसके कारण वह उस सिनेमा को देखते है। नतीजा यह है कि आज बलात्कार, छेड़छाड़ की घटनायें आये दिन सुनाई पड़ती है।

अध्ययन के उद्देष्य

प्रस्तावित लघु षोध प्रबन्ध के लिए निम्नलिखित उद्देष्य निर्धारित किये गये है–

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के सैद्धान्तिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

Volume : 5 | Issue : 9 | September 2016 • ISSN No 2277 - 8179 | IF : 3.508 | IC Value : 69.48

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के राजनैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ–
प्रस्तुत अध्ययन की उद्देष्यपूर्ण परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। जो निम्नलिखित है–

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के राजनैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

षोध प्रविधि–
प्रस्तुत अध्ययन को सम्पादित करने हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में इलाहाबाद षहर के माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं को लिया गया है। अप्रासम्भाव्यता न्यादर्षन विधि द्वारा विद्यालय का चयन तथा बालकों का चयन पुंजानुसार विधि द्वारा किया गया है इसमें कक्षा 11 एवं 12 के 50 छात्र जिसमें 25 टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले एवं 25 टी0वी0 एवं सिनेमा न देखने वाले छात्र को लिया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन हेतु डॉ0 रामजी श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मानकीकृत प्रष्नावली का चयन किया गया है।

1. उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के सैद्धान्तिक मूल्यों का विष्लेशण एवं व्याख्या–

सारणी–1
उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के सैद्धान्तिक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात की तालिका

| Ø0 la0 | न्यादर्ष | N | M | S.D. | D= ($M_1$~$M_2$) | $\delta_D$ | t-value | सारणी मान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 38.2 | 6.78 | 4.12 | 1.92 | 2.14 | 2.01 df=48 |
| 2. | मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 34.08 | 6.81 | | | | |
| 3. | उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 38.2 | 6.78 | 2.92 | 1.89 | 1.54 | 2.01 df=48 |
| 4. | निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 35.28 | 6.59 | | | | |
| 5. | मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 34.08 | 6.81 | 1.20 | 1.89 | 0.633 | 2.01 df=48 |
| 6. | निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 35.28 | 6.59 | | | | |

0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत

प्रस्तुत सारणी 1 में उच्च स्तर एवं मध्यम स्तर पर पर टीवी एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों के सैद्धान्तिक मूल्य का टी–अनुपात 2.14 प्राप्त हुआ जो कि मुक्तांष 48 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 2.01 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में सैद्धान्तिक मूल्य मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक है।

2. उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के आर्थिक मूल्यों का विष्लेशण एवं व्याख्या–

सारणी–2
उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के आर्थिक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात की तालिका

| Ø0 la0 | न्यादर्ष | N | M | S.D. | D= ($M_1$~$M_2$) | $\delta_D$ | t-value | सारणी मान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | उच्च स्तर पर टी 0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 38.2 | 6.78 | 4.12 | 1.92 | 2.14 | 2.01 df=48 |
| 2. | मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 34.08 | 6.81 | | | | |
| 3. | उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 38.2 | 6.78 | 2.92 | 1.89 | 1.54 | 2.01 df=48 |
| 4. | निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 35.28 | 6.59 | | | | |
| 5. | मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 34.08 | 6.81 | 1.20 | 1.89 | 0.633 | 2.01 df=48 |
| 6. | निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 35.28 | 6.59 | | | | |

0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत
प्रस्तुत सारणी 2 में उच्च स्तर एवं मध्यम स्तर पर टीवी एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों के आर्थिक मूल्य का टी–अनुपात 2.44 प्राप्त हुआ। उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में आर्थिक मूल्य मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक है।
उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में आर्थिक मूल्य निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों से अधिक है।

3. उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का विष्लेशण एवं व्याख्या–

सारणी–3

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात की तालिका

| क्र0 सं0 | न्यादर्श | छ | ड | ण्क्ण | क्त्र ;ड.ड.द्ध | $\delta_D$ | ज.अंसनम | सारणी मान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 43.04 | 5.29 | 4.04 | 1.66 | 2.44 | 2.01 कत्रि48 |
| 2. | मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 39.0 | 5.17 | | | | |
| 3. | उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 43.04 | 5.29 | 5.76 | 1.61 | 3.55 | 2.01 कत्रि48 |
| 4. | निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 37.28 | 6.13 | | | | |
| 5. | मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 39.0 | 5.17 | 1.72 | 1.60 | 1.07 | 2.01 कत्रि48 |
| 6. | निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 37.28 | 6.13 | | | | |

0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत

प्रस्तुत सारणी 3 में उच्च स्तर पर टीवी एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का टी–अनुपात 2.44 प्राप्त हुआ। अतः कहा जा सकता है कि उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में सौन्दर्यात्मक मूल्य मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक है।

उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में सौन्दर्यात्मक मूल्य निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों से अधिक है।

4. उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के सामाजिक मूल्य का विश्लेशण एवं व्याख्या–

सारणी–4

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के सामाजिक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात की तालिका

| क्र0 सं0 | न्यादर्श | छ | ड | ण्क्ण | क्त्र ;ड.ड.द्ध | $\delta_D$ | ज.अंसनम | सारणी मान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 39.44 | 5.97 | 3.68 | 1.82 | 2.01 | 2.01 कत्रि48 |
| 2. | मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 35.76 | 6.88 | | | | |
| 3. | उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 39.44 | 5.97 | 1.92 | 1.74 | 1.09 | 2.01 कत्रि48 |
| 4. | निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 37.52 | 6.38 | | | | |
| 5. | मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 35.76 | 6.88 | 1.76 | 1.87 | 0.94 | 2.01 कत्रि48 |
| 6. | निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 37.52 | 6.38 | | | | |

0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत

प्रस्तुत सारणी 4 में उच्च स्तर, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टीवी एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में सामाजिक मूल्य समान रूप से निहित है।

5. उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के राजनैतिक मूल्य का विश्लेशण एवं व्याख्या–

सारणी–5

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के राजनैतिक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात की तालिका

| क्र0 सं0 | न्यादर्श | छ | ड | ˆण्क्ण | क्त्र ;ड,ड,द्ध | $\delta_D$ | ज.अंसनम | सारणी मान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 39.36 | 7.84 | 4.20 | 2.17 | 1.93 | 2.01 कत्रि48 |
| 2. | मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 35.16 | 7.52 | | | | |
| 3. | उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 39.36 | 7.84 | 3.56 | 2.12 | 1.68 | 2.01 कत्रि48 |
| 4. | निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 35.8 | 7.12 | | | | |
| 5. | मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 35.76 | 6.88 | 0.64 | 2.07 | 0.309 | 2.01 कत्रि48 |
| 6. | निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 35.16 | 7.52 | | | | |

0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत

प्रस्तुत सारणी 5 में उच्च स्तर, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टीवी एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में राजनैतिक मूल्य समान रूप से निहित है।

6. उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के धार्मिक मूल्य का विश्लेशण एवं व्याख्या–

सारणी–6

उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के धार्मिक मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात की तालिका

| क्र0 सं0 | न्यादर्श | छ | ड | ण्क्ण | क्त्र;ड.ड.द्ध | $\delta_D$ | ज.अंसनम | सारणी मान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 34.04 | 6.79 | 4.60 | 1.82 | 2.53 | 2.01 कत्रि48 |
| 2. | मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 38.64 | 6.03 | | | | |
| 3. | उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 34.04 | 6.79 | 2.84 | 1.86 | 1.52 | 2.01 कत्रि48 |
| 4. | निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 35.8 | 7.12 | | | | |

Volume : 5 | Issue : 9 | September 2016 • ISSN No 2277 - 8179 | IF : 3.508 | IC Value : 69.48

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5. | मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 38.64 | 6.03 | 1.76 | 1.96 | 0.89 | 2.01 कत्रि48 |
| 6. | निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्र | 25 | 35.8 | 7.12 | | | | |

0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत

प्रस्तुत सारणी 6 में उच्च स्तर एवं मध्यम स्तर पर टीवी एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों के धार्मिक मूल्य का टी–अनुपात 2.53 प्राप्त हुआ। अतः कहा जा सकता है कि मध्यम स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में धार्मिक मूल्य उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों से अधिक है।

निश्कर्श–

प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विष्लेशण करने के पष्चात् निम्न निश्कर्श प्राप्त हुए–

उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य अन्य मध्यम स्तर एवं निम्न स्तर की की अपेक्षा अधिक है।

उच्च स्तर, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टीवी एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में सामाजिक मूल्य समान रूप से निहित है।

उच्च स्तर, मध्यम एवं निम्न स्तर पर टीवी एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में राजनैतिक मूल्य समान रूप से निहित है।

मध्यम एवं निम्न स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों में धार्मिक मूल्य उच्च स्तर पर टी0वी0 एवं सिनेमा देखने वाले छात्रों से अधिक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. आनंद, श्रुति (2001), स्नातक स्तर के षहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, इलाहाबाद : (पीएचडी), इलाहाबाद विष्वविद्यालय।
2. गुप्ता, एन0एल0 (2001). ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ द इफैक्टिवनेस ऑफ वैरियस स्ट्रेटजीज़ फार द डेवल. पमेन्ट ऑफ मोरल वैल्यूज, पी–एच.डी. थीसिस जयपुरः राजस्थान विष्वविद्यालय ।
3. जैन एस0 डी0 उद्धृत सोनकर, डी0के0 (2009), अनुसूचित जाति व पिछडे वर्ग के विद्यार्थियों के अपने मूल्यों से संबंधित अध्ययन, लघु षोध (अप्रकाषित) इलाहाबाद : नेहरु ग्राम भारती विष्वविद्यालय।
4. माथुर, जी0पी0 (2006). वैल्यू एण्ड इट्स इफैक्श ऑन आफीसियल स्टेटस इन रिलेषन टू जाब सैटिस्फैक्षन, सेन्ट जार्ज कालेज, भुवनेष्वर, इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एण्ड एजुकेषन अंक 37, पृश्ठ सं0 13–16।
5. वेन्स, एच.ओई0डी0 (2005). एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी इन वैलयू एजूकेषन एण्ड इट्स रिलेषनषिप, इन बुच (एजु) ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेषन, पृश्ठ सं0 470–470।
6. वर्मा आई0 बी0 (2005). एन इन्वेस्टीगेषन इन टू द इम्पैक्ट ऑफ ट्रेनिंग आन द वैलयूज, इन बुच (एजु) ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेषन, सी0एस0एस0ई0, पृश्ठ संख्या 402–403।
7. सारस्वत, आर (1982), माध्यमिक स्तर के छात्रों के समायोजन, मूल्य उपलब्धि, स्थिति एवं लिंग प्रत्यय का अध्ययन, लखनऊ : जनरल पत्रिका, (2007) वाल्यूम 5।